।। अर्हम् ।।

# आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति,श्रीडँगरगढ़ (बीकानेर)

दूरभाष : 01565–224600,224900

ई–मेल : jstsdgh01565@gmail.com

## शुक्ल लेश्या में जीना सीखें – युवाचार्य महाश्रमण

**–तुलसीराम चौरड़िया (मीडिया संयोजक)–**

**श्रीडूँगरगढ़ 7 फरवरी :** युवाचार्यश्री महाश्रमण ने गीता के सत्व गुण एवं जैन दर्शन की शुक्ल लेश्या को साम्य बताते हुए प्रवचन ने कहा कि लेश्या के आधार पर आदमीं का व्यवहार बनता है। कृष्ण,नील,कपोत लेश्या अशुभ परिणाम देने वाली है। पदम, तेजो एवं शुक्ल लेश्या शुभ भावों की द्योतक है। शुक्ल लेश्या निर्मल, उज्जवल जीवन बनाती है। गीता के तमो गुण से प्रथम तीन लेश्याएं समानता रखती है, और शुक्ल लेश्या सत्व गुण से साम्यता की कसौटी पर खरी उतरती है। परम शुक्ल लेश्या की स्थिति को प्राप्त करने का प्रयास होना चाहिए। इस स्थिति में जीने वाले का आभामण्डल प्रभावकारी होता है। उन्होनें कहा कि तमोगुण व्यक्ति के ज्ञान को आवृत कर अज्ञान में प्रवृत कर देता है। इस गुण वाला अवसर का लाभ नहीं उठा पाता है। आलस्य और प्रमाद के कारण अवसर को खो देता है। रजोगुण कर्म में आसक्त बनाता है।

युवाचार्य प्रवर ने आचार्य भिक्षु के जीवन–चरित्र को उजागर करने वाला जयाचार्य कृत भिक्षु जस रसायण व्याख्यान के वाचन के दौरान सद्गुरु के खोज के प्रसंगों को प्रस्तुत करते हुए दीक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला।

## जैन विद्या परीक्षा पाठय्क्रम में बदलाव
## आचार्य महाप्रज्ञ की पुस्तकों को जोड़ा नवीन पाठय्क्रम में

जैन विश्व भारती के शिक्षा विभाग समण संस्कृति संकाय द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित होने वाली जैन विद्या परीक्षाओं के पाठय्क्रम में बदलाव किया गया है। अब नये सत्र से परीक्षाओं के पाठय्क्रम में आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा लिखित जैन दर्शन मनन और मीमांसा एवं आत्मा के दर्शन को जोड़ा गया है। उक्त जानकारी देते हुए मुनि जयंत कुमार ने बताया कि जैन विद्या परीक्षाओं में लगभग 10 हजार विद्यार्थीयों के आवेदन प्राप्त होते हैं, जिनकी देश के 232 केन्द्रों पर परीक्षाएं आयोजित होती हैं। 9 वर्षीय पाठय्क्रम में प्रथम चार भाग के पाठय्क्रम में बदलाव नहीं किया गया है। भाग–5 में जैन परम्परा का इतिहास एवं जैन तत्त्व विद्या खण्ड–1 ाके रखा गया है। जैन विद्या भाग–6 में जैन धर्म; जीवन और जगत एवं जैन तत्त्व विद्या खंड–2,3 को जोड़ा है। भाग–7 में भिक्षु विचार दर्शन एवं जीव–अजीव, भाग–8 में श्रमण महावीर एवं आत्मा का दर्शन (हिन्दी संस्करण) भाग–9 में दोनों प्रश्न पत्रों के लिए जैन दर्शन मनन और मीमांसा पुस्तक को सम्मिलित किया गया है।

**तुलसीराम चौरड़िया**
**मीडिया संयोजक**